लोक–कला से प्रभावित होती समकालीन आधुनिक कला

डॉ० वन्दना वर्मा
एसो0 प्रोफे0, चित्रकला विभाग,
जे०के०पी० पी०जी० कॉलेज, मुजफ्फरनगर
Email: vandanavrm@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ0 वन्दना वर्मा

'लोक–कला से प्रभावित होती समकालीन आधुनिक कला'

Artistic Narration 2019, Vol. X, No. 2, pp.176-182

https://anubooks.com/?page_id=6393

सारांश

आधुनिक भारतीय कला का यह सुखद एवं स्वस्थ काल है क्योंकि आधुनिक कलाकार भारतीय लोक कला, लघु चित्रों एवं जनजातीय कला के प्रति सजग हो गये हैं। जिनका प्रभाव आधुनिक कला में किसी न किसी रूप में दिखायी देता है। अन्यथा एक समय ऐसा भी था जब इन लोक कलाकृतियों, लघु चित्रों एवं जनजातीय कला की उपेक्षा की गयी थी। परन्तु आज के नगरीय व सभ्य मनुष्य के अचेतन मस्तिष्क में परम्परागत कला का गुणात्मक प्रभाव दिखायी देता है। इसी तथ्य का समर्थन मानव जाति विज्ञान के द्वारा किया गया है। जिस प्रकार टेलर की पुस्तक 'प्रिमिटिव कल्चर' में स्पष्ट किया गया है कि संस्कृति के विकास में कला का अमूल्य योगदान रहा है इसी प्रकार फज़र की पुस्तक 'गोल्डन बो' में सांस्कृतिक विकास में लोक कला एवं सांकेतिक चित्रों के महत्व का स्पष्ट उल्लेख किया है।

आधुनिक चित्रों पर सबसे बड़ा आरोप यही लगाया जाता है कि वे समझ में नहीं आते, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन संगीत सामूहिक रूप से यदि आधुनिक कला की विशेषता संक्षेप में बतानी हो तो कहा जा सकता है कि वह अधिक से अधिक व्यजक रूपों की खोज है। इसी प्रयत्न में वह बाल कला (चिल्ड्रेंस आर्ट) की सरलता से आकर्शित हुई, इसी कारण वह आदिम कला (प्रिमिटिव आर्ट) की शक्तिमता से प्रभावित हुई तथा इसी प्रयास में उसने लोक कला (फोक आर्ट) के तत्वों को अपने में समाहित किया। यह सारे का सारा अभियान मूलतः शुद्ध और सशक्त व्यजना से रूपाकारों को भर देने के निर्मित ही हुआ और इसमें संदेह नहीं कि उसे पर्याप्त सफलता भी प्राप्त हुई है?

भारतीय लोक कला के तत्व किसी न किसी रूप में आधुनिक कला में विद्यमान है। यदि आधुनिक भारतीय कला की गहनता को समझना है तो यह अनिवार्य है कि हमें लोक कला की गहनता को भी समझना पड़ेगा, क्योंकि आधुनिक कला के विकास में लोक कला का महत्वपूर्ण योगदान है। आज भी बहुत से चित्रकार किसी न किसी रूप में लोक कला से प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं। अतः यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि वर्तमान समय में लोक कला, बाल–कला एवं जनजातीय कला ने आधुनिक कला को सुदृढ आधार प्रदान किया है।

आधुनिक भारतीय कला पर लोक–कला का प्रभाव निश्चित रूप से स्पष्ट होता है। परन्तु दोनों आधुनिक कला और लोक–कला अपनी–अपनी विशिष्टता लिये हुए हैं। इन्हीं आधारभूत विशिष्टताओं के कारण आधुनिक कला और लोक–कला दोनों को परिभाषित किया गया है। भारतीय दृश्य–कला की एक समृद्ध परम्परा रही है जिसकी अपनी एक भाषा होती है और आधुनिक कलाकार अपनी निजी भाषा को सुव्यवस्थित एवं विकसित करते हैं। दूसरी ओर लोक–कला में शाश्वत रहने का गुण विद्यमान रहता है। लोक–कला लोक कलाकार के हाथ से गुरु होती है और वह सार्वभौमिकता का गुण लिये होती है जो जन–जन तक पहुंचती है। लोक–कला की सामान्य भाशा होती है। लोक–कला में सीधे–साधे आकार, लोक लुभावन रंग योजना होती है जो मानव मस्तिष्क पर अमिट प्रभाव छोड़ती है। लोक–कला का संयोजन सपाट है। इसमें कहीं ऊपर की ओर, कहीं नीचे की ओर देखते हुये आकार बनाये जाते हैं ये आकार एक दूसरे पर चढ़े हुए होते हैं। परन्तु लयात्मक होते हैं। इसमें एक ही चित्र में अनेक क्षितिज हो सकते हैं अथवा एक ही चित्र में घर के आन्तरिक व बाहय दोनों पक्षों को लयात्मक ढंग से बनाते हैं। इसमें अधिकतम प्राथमिक रंगों का प्रयोग किया जाता है। लोक–कला में आकार बिखरे हुए होने के बाद भी एकता का बोध कराते हैं।

आधुनिक कला व्यक्तिवादी प्रकृति की होती है। जबकि लोक कला में जनसाधारण की अभिव्यक्ति का गुण समाहित होता है। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या आधुनिक कला को भी व्यक्तिवादी प्रकृति के स्थान पर जन सामान्य के गुण को लेकर चलना चाहिये ? यदि हा तो आधुनिक कला में लोक–कला के गुणों व तत्वों को आधुनिक–कला से जोड़ना पड़ेगा। आधुनिक कलाकारों ने इस तथ्य को समझा और लोक–कला की ओर उन्मुख हुए। यह परिवर्तन उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध से स्वीकार किया गया है और परिणाम स्वरूप आधुनिक–कला पल–पल परिवर्तनशील प्रक्रिया से गुजर रही है।

भारतीय आधुनिक कला को नई दिशा प्रदान करने में यामिनी राय का महत्वपूर्ण योगदान है। आधुनिक चित्रकला के क्षेत्र में नये रूपों से प्रवाहित होने वाली लोकोन्मुखी धारा, जिसके उद्‌गव का श्रेय यामिनी राय को दिया जाता है, के महत्व को देखा जाना चाहिये। लोक जीवन का चित्रण तो आचार्य

नन्दलाल बसु आदि ठगुकर शैली अग्रणी कलाकारों के द्वारा भी हुआ है। परन्तु यामिनी राय का महत्व इसलिए विशेष है कि उन्होंने लोक शैली को अभिजात्य कला के क्षेत्र में स्थापित करने का सफल प्रयत्न किया। लोक जीवन का चित्रण और लोक शैली में किसी वस्तु का चित्रण, तात्विक रूप से यह दोनों सर्वथा भिन्न वस्तुएं हैं जिनके बीच के अन्तर को समझ लेना यामिनी राय द्वारा प्रवर्तित लोक शैली की आधुनिक चित्रण प्रणाली के मूल्य बोध के लिए अति आवश्यक है। यामिनी राय के चित्रों में लोक–कला के रंग, रेखाएं, घरातल सभी कुछ नजर आता है। वे पूरी तरह से लोक–कला पर सम्मोहित हो गये ठेठ भारतीय पद्धति से चित्र बनाने वाले ये पहले कलाकार थे। इसलिए उनकी कला को 'पापुलर आर्ट' कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी लोक कला को किसी कलाकार ने इतना सम्मान नहीं दिया. जितना यागिनी राय ने दिया थामिनी राय ने अपनी स्वतन्त्र भाषा विकसित कर ली थी। उन्होंने लोक आधुनिक भाषा को भली भांति समझ लिया था। इसलिए उन्हें भारतीय आधुनिक कला का पितामह कहा जाता है। जबकि उनके चित्र सीधे–सादे एवं लोक लुभावन है। ये एकमात्र भारतीय चित्रकार थे, जिन्हें यूरोप में सबसे अधिक जाना व समझा जाता है। यामिनी राय लोक–कला से इसलिए भी प्रभावित हुए क्योंकि लोक–कला कोमलता, विविधता, एकता एवं सार्वजनिकता के गुणों से सम्पन्न होती है। उन्होंने कला में लोक–कला को नये अनुसंधान के रूप में प्रयोग किया था। उन्होंने लोक–कला की अनुभूतियों को ग्रहण कर उसे नये रूपाकारों में अभिव्यक्त किया है (चित्र–136 से 142)

बीसवीं शती के मध्य से भारतीय कलाकार लोक–कला से अधिक जुड़े क्योंकि लोककला में भारतीयता की महक अधि एक रहती है। कलाकारों ने अपनी रचनात्मकता में लोक–कला एवं जनजातीय कला को बड़े फैशन के रूप में स्थान दिया। यह स्थिति केवल चित्र एवं मूर्ति में ही नहीं, बल्कि संगीत, जैसी कलाओं में भी है। लोक–कला के आकारों को उसकी डिजाइन, सौन्दर्य और गुण के कारण कलाकारों ने उसे अपनाया यामिनी राय के बाद अनेकों कलाकारों ने अपने आस–पास की लोक कला का अध्ययन कर अपनी चित्रभाषा विकसित करने का प्रयास किया। बहुत से कलाकारों ने लोक कला के सरल रूपों को ज्यों का त्यो भी उतारा है। कलाकारों ने यह भी सहर्श स्वीकार किया है कि उन्होंने लोक कला से प्रेरणा प्राप्त की है। कला संस्थान भी लोक कलाकारों को बुलाकर विद्यार्थियों को लोक कला की बारीकियों को समझाने का प्रयास करते है। कई सास्कृतिक केन्द्र भी आधुनिक कलाकार एवं लोक कलाकारों को एक साथ कार्यशालाओं के लिए भी आमंत्रित करता है। उत्तर–पूर्व के सांस्कृतिक केन्द्र ने कई वर्षों पूर्व इस तरह का आयोजन भी किया था।

आधुनिक कलाकार यह समझ सकते हैं कि लोक कलाकारों के रंग की चटक–मटक से नैतिक मूल्य के भार से उन्मुका उल्लास की अभिव्यक्ति भाव वेग और रस की धाराएं सब कुछ उभर कर आते हैं। ऐसी कला सरस एवं इन्द्रिय ग्राहय होती है। आधुनिक कला इन्हीं अवयवों की खोज में लोक–कला से समीपता बनाने के प्रयास में लगी हुई है। सिद्धानाविहीनता भी एक ऐसा तत्व है जो लोक–कला व आधुनिक कला को समीप लाने का कार्य करता है।

भारत के कुछ कलाकार जो पारम्परिक ऊर्जा स्त्रोत की ओर लौटना चाहते है में भारत की लघु चित्रकला लोक कला, तन्त्र व आदिम कला के प्रति रुझान है। जाहिर है कि इनके रुझान का अलग–अलग महत्व है लेकिन कारण उसका एक ही है। परम्परा से ऊर्जा ग्रहण करना इन कलाकारों

में प्रो० के०एस० कुलकर्णी, प्रो० रामचन्द्र शुक्ल बाघ एम०एन० मिश्र आरएस० सिंह व अपर्णा कौर सहित अनेक कलाकार है जो किसी न किसी रूप से लोककला से प्रेरित रहे हैं। प्रो० के०एस०, कुलकर्णी (1916–1994) भारतीय आधुनिक कला के प्रमुख कलाकार थे। इन्होंने बनारस के तीज त्यौहार आदि को आधुनिक संदर्भ में लोक चित्र शैली में चित्रित कर प्रस्तुत किया। बनारस स्टेशन पर इनके बनाये लोक शैली के म्यूरल चित्र काफ़ी प्रसिद्ध रहे। जिन्हें 1976 में भारत सरकार के रेल विभाग द्वारा बनवाया गया था। जिसे वह अपने कई छात्र कलाकारों (1) डा० आर एस० सिंह, रीडर व अध्यक्ष, चित्रकला विभाग, जे०वी० जैन कॉलेज, सहारनपुर (2) डा० मनोज, रीडर व अध्यक्ष ललित कला विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर व (3) डा० अंजन चक्रवर्ती, रीडर दृश्य कला विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के सहयोग से पूरा कर सके। उनका लोक कला का एक रेखाचित्र जिसे डा० आर०एस० सिंह की एक प्रदर्शनी के समय सन 1973 में बनाया था, प्रस्तुत है (चित्र–143) प्रो० रामचन्द्र शुक्ल आधुनिक चित्र शैली के प्रयोग वादी चित्रकार है। किन्तु बीच–बीच में इन्होंने लोक शैली पर छोटे–छोटे चित्र बनाये हैं। ये चित्र दर्शको पर अपनी अमिट छाप छोड़ते हैं। ये चित्र अत्याधिक सुन्दर है व चटकीले लोक रंगों के बनाये गये हैं (चित्र–144 से 146)

डा० एच०एन० मिश्र एक ऐसे आधुनिक कलाकार हैं जिन्होंने परम्परागत रीति रिवाजों से प्रेरणा ग्रहण की है। इन्होंने लोक तत्वों को आधुनिक शैली में प्रस्तुत किया है। साझी इनका प्रिय विषय रहा है। इनके द्वारा साझी पर बनायी गयी डाक्यूमेन्टरी रूड़की विश्वविद्यालय में संग्रहित है (चित्र–147) डा० आर०एस० सिंह ग्रामीण परिवेश से जुड़े चित्रकार हैं। ग्रामीण मिट्टी के खिलौनों, मित्ति चित्रो व दैनिक जीवन से जुड़े कलात्मक लोक रूपों का सकलन व अध्ययन कर उन रूपाकारों को डा० सिंह ने आधुनिक चित्रशैली में चित्रित किया है। अतः इनके इस प्रकार के बने आधुनिक चित्रों को प्रतीकात्मक लोक शैली का कहा जा सकता है। लोक रूपों को डा० सिंह उसी रूप में न उतार कर बल्कि लोक शैली के रूपाकों, रंगो रेखाओं को आत्मसात् कर उसे एक नये रूप में चित्रित किया है। उनके चित्रों में ग्रामीण मिट्टी के खिलौने (हाथी, घोडा, मछली, तोता आदि), कोहबर के अलंकरण आदि को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इनके चित्रों में एक तरफ तो लोक परम्परा का निर्वाह किया गया है तो दूसरी तरफ आधुनिक कला के नये प्रयोगों पर बल दिया गया है। डा० सिंह को दो पुरस्कार भी प्राप्त हो चुके हैं। पहला स्टेट लेविल का आईफैक्स एवार्ड और दूसरा स्टेट लेविल का ही ललित कला एकेडमी से पुरस्कार जिन अन्य कलाकारों की कृतियों में लोक कला की ओर रुझान देखने को मिलता है उनमें आलमेलकर व अपर्णा कौर प्रमुख है (चित्र–148 से 151)

ए०ए० आलमेलकर के कार्य में समकालीनता एवं परम्परा के गुणों का अपूर्व प्रयोग मिलता है। यह परम्परा को नया अर्थ प्रदान करते हैं। वे आधुनिक इस तरह है क्योंकि वे रेखाओं को आवश्यक कोमलता प्रदान करते हैं। उनकी रेखाकन पद्धति आधुनिक है परन्तु विषय वस्तु परम्परागत है डिजाइन के बोध के कारण उनके रंग जीवन्त रहते हैं। रंग प्रायः मीनाकाम रहते हैं पैटर्न सजावटी प्रतीक निर्मल तथा आकृतिया पार्श्व में दिखायी जाती है। परम्परा और आधुनिकता का अपूर्व संयोग हैं आलमेलकर के चित्र अपर्णा कौर उन चित्रकारों में हैं जो हमारे मिनिएचर्स और लोक कलाओं की परम्परा को अपने तरीके से आधुनिक बनाते हुए प्रस्तुत करती हैं। उनके चित्रों में आकृति मूलकता और अमूर्तता परस्पर इस तरह गूंथे होते हैं कि देखते हुए यास्य भरा, आश्चर्य अनुभव होता है। इनके विषय आधुनिक होते हैं परन्तु उनमें लोक कला की आकृतिया भी चित्रित होती है।

लोक कला में ऐसा गुण है जिसके सहारे बड़े से बड़े कठिन भाव की अभिव्यक्ति की जा सकती है जिसे प्रशिक्षित चित्रकार को अभिव्यक्त करने में कठिनाई आती है। आधुनिक कला के विकास के लिए लोक कला के तत्वों की सद आवश्यकता पड़ती रहेगी। क्योंकि हमारी परम्परागत कला आधुनिक कलाकारों को गति एवं दिशा देने का महान कार्य कर सकती है। लोक कला एक जीवित बीज दृष्टिगत शब्दकोश का पुस्तकालय तथा देखी जाने वाली वह भाषा है जिससे सदैव प्रेरणा प्राप्त की जा सकती है।

क्षेत्रीय कला का मूल्यांकन व महत्व

किसी भी क्षेत्र की संस्कृति को पूर्णतया समझने के लिए उस क्षेत्र की स्थानीय कला को समझना जरूरी है। कला और संस्कृति का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। लोक जीवन की सच्ची झांकी उस क्षेत्र की लोक कला में देखने को मिलती है। क्षेत्र विशेष के लोक गीत, लोक चित्र लोक नृत्य लोक अभिनय और लोक चर्चाएं आदि सभी कला क्षेत्रीय कला के स्वरूपों को प्रतिबिम्बित करती है। चौक पूरना, सांझी, अहोई आदि ऐसी लोक परम्परायें है जिनसे एक निश्चित क्षेत्र की लोक कलाओ का बोध होता है।

प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशेषता होती है। वहां सामान्य क्रिया–कलापों में जो लोक कला बनायी जाती है उसकी जानकारी लोक गीतों, लोक कथाओं से प्राप्त होती है। जैसे– सहारनपुर जनपद में सांझी, देव उठनी एकादशी, गोवर्धन पूजा भाईदूज और दशहरा पूजा आदि। इन लोक कलाओं की व्याख्या से उस क्षेत्र विशेष के रहन–सहन, सभ्यता तथा संस्कृति आदि की व्याख्या होती है। अर्थात् स्थानीय निवासियों की कलात्मक अभिव्यक्ति का स्वरूप निर्धारण करने में अनेक तत्व उत्तरदायी होते हैं। उस क्षेत्र का लोक जीवन, धर्म एवं संस्कृति, परम्पराएं, सामाजिक–आर्थिक राजनैतिक परिस्थितियां, प्रकृति, क्षेत्रीय साहित्य, स्थापत्य एवं अलकरण, वहां के निवासियों की देश–भूषा, सौन्दर्य प्रसाधन, निवासियों का तकनीकी ज्ञान, जलवायु तथा वातावरण भी क्षेत्रीय कला को प्रभावित करते है।

सहारनपुर जनपद की क्षेत्रीय कलाओं में सर्वप्रथम भित्ति चित्र जनसामान्य की लोक कला की गहनता को अभिव्यक्त करते हैं। क्षेत्रीय कला की अभिव्यक्ति का दूसरा प्रमुख एवं विशिष्ट रूप सहारनपुर जनपद की सांझी कला का प्रयोजन है। तीसरा सहारनपुर जनपद में विभिन्न तीज–त्यौहारों पर बनने वाली लोक कलाएं तथा सहारनपुर जनपद की काष्ठ कला में पारंगता एवं नक्कासी में भावों की अभिव्यक्ति क्षेत्रीयता के पक्ष को प्रतिबिम्बित करती है।

किसी भी क्षेत्र की कला वहाँ के जन सामान्य के हृदय के भावों की अभिव्यक्ति होती है। एक लोक कलाकार अपनी अन्त प्रेरणाओं को एवं सूक्ष्म अनुभूति की अभिव्यक्ति को मूर्त रूप प्रदान करता है। लोक कलाओं में शिल्पकला का एक विशिष्ट स्थान होता है। शिल्प कलाओं की श्रेणी में काण्ड शिला का अपना विशेष महत्व है। सहारनपुर जनपद में काष्ठ–शिल्प की परम्परा अति प्राचीन है। यहां के शिल्पियों ने शाश्वत् सत्य को आत्मसात कर अपनी कला को सदा के लिए अमर बना दिया है। यहां के अधिकाश शिल्पियों एवं कारीगरों ने अपने अन्तः सौन्दर्य के वैभव को काष्ठ–कला के विभिन्न नमूनों के द्वारा अभिव्यक्त किया है।

जनपद में शीशम की लकड़ी पर आधारित एवं विकसित काष्ठ शिल्प के विभिन्न नमूनों में यहां की सामाजिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक अन्तरात्मा के दर्शन होते हैं क्योंकि शिल्पकारों एवं कलाकारों ने चौरसी एवं छैनी आदि औजारों का सहारा लेकर सामाजिक वर्गों की आवश्यकता अनुसार नमूने बनाकर तैयार किये हैं। इन नमूनों में हिन्दू मुस्लिम दोनों ही संस्कृतियों के दर्शन होते हैं। इनमें प्रमुख अंगूरी बेल, पंचकोण पत्ती, टकाई,

हाथी दात की भराई, कश्मीरी आलेखन चिनार की पत्ती, ज्यामितीय आकार, खजूर के पेड़, अरबी भाषा, धार्मिक प्रतीक आदि को विविध शैलियों में अपनाते हुए अपनी सृजनात्मक अनुभूतियों को अभिव्यक्त किया।

काष्ठ–शिल्पकला में समय एवं परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन होता गया। सहारनपुर जनपद में जब मुस्लिम कारीगरों की अधिकता रही एवं मुस्लिम शासकों का प्रभाव रहा तब इस कला में मुस्लिम संस्कृति की छाप अधिक रही। इसका उदाहरण कश्मीरी प्रकार की नक्काशी, अंगूर की बेल तथा चिनार के पेड़ों की नक्काशी आदि है। परन्तु जैसे–जैसे हिन्दू, संस्कृति का प्रभाव बढ़ा व हिन्दू कलाकारों की संस्था बढ़ी तब इस कला में हिन्दू संस्कृति के तत्व शामिल हो गये। इनमें प्रमुख गुडहल व कमल के फूल व ज्यामितीय डिजाइन है।

सहारनपुर जनपद में मित्ति चित्रों का आयोजन स्थापत्य, चित्र तथा उनकी उपयोगिता को ध्यान में रखकर किया गया है। जिसमें विभिन्न ज्यामितीय आकारों के फलको में चित्रांकन किया गया है। इन चित्रों में स्थिरता तथा कडेपन की अनुभूति होती है तो कभी कोमलता तथा गत्यात्मकता की। जनपद के इन चित्रों का विशय कहीं धार्मिक है. कहीं सामाजिक, तो कहीं अलंकारिक है। धार्मिक भित्ति चित्र मन्दिरों में देखने को मिलते हैं परन्तु कहीं–कहीं इस प्रकार के चित्र छतरियाँ पर भी बनाये गये हैं। इन चित्रों के बनाने का उद्देश्य धर्म के प्रति आकर्षण उत्पन्न करना तथा धार्मिक प्रवर्षत्ति को अभिव्यक्त करना था सामाजिक भित्ति चित्र मुख्यतः भवनों में तथा छतरियों पर बनाये गये हैं। इन चित्रों में दैनिक जीवन के कार्य–कलाप, रहन–सहन, वेश–भूषा तथा लोक जनसामान्य की परम्पराओं को अभिव्यक्त किया गया है। सामाजिक भित्ति चित्रों को बनाने का उद्देश्य वैभव दर्शाना तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करना है क्योंकि अभिजात्य वर्ग में बड़ी–बड़ी इमारत बनाने, अटारी बनाने तथा उसे सुन्दर एवं वैभवशाली बनाने के लिए सामाजिक चित्रों का चित्रांकन करना परम्परा के अधीन रहा है। इसका स्पष्ट उदाहरण नन्दा गाटे की हवेली है। क्योंकि नन्दा गाटे ने हवेली का निर्माण प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए किया था।

जनपद में अलंकारिक चित्रों का चित्रांकन मन्दिरों में, भवनों में अटारियों में, छतरियों में समान रूप से पाया गया है। अलकारिक चित्रों को बनाने का उद्देश्य सुन्दरता तथा कलात्मकता को प्रदर्शित करना है। मन्दिरों को सुन्दर इमारतों को वैभवशाली तथा छतरियों को आनन्दमयी बनाने के उद्देश्य से अलंकारिक चित्रों का चित्रांकन किया गया था।

सहारनपुर जनपद में लोक कला का उत्तम एवं विशिष्ट उदाहरण जनपद की सांझी कला है। जनपद में सांझी का त्यौहार बड़े उल्लास के साथ मनाया जाता है। आश्विन नवरात्रों में सांझी लगायी जाती है। सांझी को देवी शक्ति के रूप में माना जाता है। साझी को अलग–अलग स्थानों पर अलग–अलग नाम से जाना जाता है। यथा–सांझी, सांची, संजुली, सिन्झा, सुन्झलदे, सिन्झामाई तथा सांझी माई आदि।

साझी अभिव्यक्ति के माध्यम की वह कला है जिसकी संरचना में स्त्रियां व कन्याएं ज्यामितीय, त्रिकोणमीतीय आलेखन तथा लोक शिल्प का सहज सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। सांझी दो प्रकार की बनायी जाती है। प्रथम सांझी को दीवार पर गेरू से लिखा जाता है तथा द्वितीय साझी को मिट्टी से बनाकर दीवार पर गोबर से चिपकाया जाता है। सांझी को विभिन्न आकारों व प्रकारों में दर्शाया जाता है। सांझी कला में क्षेत्रीयता व सामाजिक परिवेश स्पष्ट दिखायी देता है। इसके चित्र में सहारनपुर जनपद के निवासियों के क्रिया–कलाप, रहन–सहन, खान–पान पहनावा, रोजमर्रा में प्रयुक्त होने वाली वस्तुएं उनका व्यवसाय तथा उनकी मानसिक सोच व उनका मानसिक स्तर आदि परिलक्षित होते हैं। सांझी को

नारी के रूप में दर्शाया जाता है, अतः उसे सुहागिन के आभूषणों से सजाया जाता है। सांझी चित्रण में एक नारी के सामाजिक सम्बन्धों को भी दर्शाया जाता है। सांझी कला में जनमानस की अभिव्यक्ति एवं लोक कलाकारों की अभिव्यक्ति प्रदर्शित होती है।

साझी प्रयोजन में विभिन्न सामाजिक वर्गों में विभिन्नता देखने को मिलती जिसमें उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति व वातावरण का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। साथ ही साथ सांझी प्रयोजन में परिवारों की धार्मिक भावना तथा रहन–सहन के स्तर को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है क्योंकि विभिन्न जातियों में अलग–अलग प्रकार व आकार की साझी इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। कहीं–कहीं पर क्षेत्र का प्रभाव भी स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। क्योंकि चिलकाना की सांझी व अन्य क्षेत्रों की साझी बनाने में भी अन्तर पाया गया है। सहारनपुर जनपद की सांझी कला अन्य क्षेत्रों की लोक कला से भिन्न है जो अपनी विशिष्टता रखती है तथा क्षेत्रीयता की पहचान बनाती है

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. भारतीय कला के पदचिन्ह– डा० जगदीश गुप्त, पृ० 25
2. वही, पृ० 22
3. भारतीय कला के पद चिन्ह–– डा० जगदीश गुप्त, पृ0 30
4. 'क' कला सम्पदा एवं वैचारिकी– द्विमासिक कला पत्रिका पृ०– 17

कला – 1

कला – 2

कला – 3